अध्याय 2: पद

विषय-सूची 3 प्रश्नावली · 9 प्रश्न

प्रश्नावली 2.1	प्रश्न-अभ्यास (क) — बोध प्रश्न	5 प्रश्न
प्रश्नावली 2.2	प्रश्न-अभ्यास (ख) — काव्य-सौंदर्य	3 प्रश्न
प्रश्नावली 2.3	भाषा अध्ययन — शब्दों के प्रचलित रूप	1 प्रश्न

प्रश्नावली 2.1 — प्रश्न-अभ्यास (क) — बोध प्रश्न

प्रश्न 1

पहले पद में मीरा ने हरि से अपनी पीड़ा हरने की विनती किस प्रकार की है?

हल

पहले पद में मीरा ने हरि (श्रीकृष्ण) से पूरी विनम्रता और भक्ति-भाव से अपनी पीड़ा हरने की प्रार्थना की है।
मीरा अपनी विनती को दृढ़ करने के लिए हरि के पूर्व के उपकारों और भक्त-वत्सलता का स्मरण कराती हैं:
• उन्होंने द्रौपदी की लाज बचाई थी — जब दुःशासन ने चीरहरण किया तब भगवान ने उसका चीर बढ़ाते-बढ़ाते इतना लंबा कर दिया कि दुःशासन थक गया।
• भक्त की रक्षा के लिए नरसिंह रूप धारण किया और हिरण्यकश्यप का वध किया।
• डूबते हुए गजराज (हाथी) को बचाया और गजराज (कुंजर) की पीड़ा काटी और उसे मगरमच्छ से बचाया।
इन तीनों उदाहरणों से मीरा यह प्रमाणित करती हैं कि हरि सदा अपने भक्तों की भीर (पीड़ा) हरते आए हैं।
अंत में 'दासी मीराँ लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर' कहकर वे अपनी दासी-भाव से प्रार्थना करती हैं कि जैसे पहले भक्तों की रक्षा की, वैसे ही उनकी पीड़ा भी हरें।

उत्तर: मीरा ने पूर्व भक्त-रक्षा के तीन उदाहरण (द्रौपदी, नरसिंह, गजराज) देकर हरि को उनकी भक्त-वत्सलता याद दिलाई और 'दासी' भाव से अपनी भीर हरने की विनती की।

प्रश्न 2

दूसरे पद में मीराबाई श्याम की चाकरी क्यों करना चाहती हैं? स्पष्ट कीजिए।

हल

दूसरे पद में मीराबाई श्याम (श्रीकृष्ण) की चाकरी (सेवा/नौकरी) इसलिए करना चाहती हैं क्योंकि इससे उन्हें तीन बातें एक साथ मिल जाएँगी:
1. दर्शन — 'चाकरी में दरसण पास्यूँ' — चाकर के रूप में निरंतर श्रीकृष्ण का दर्शन मिलता रहेगा।
2. स्मरण (खरची) — 'सुमरण पास्यूँ खरची' — उनका सुमिरन करना ही भोजन-व्यय के समान है, जो चाकरी में स्वाभाविक रूप से मिलेगा।
3. भाव-भक्ति (जागीरी) — 'भाव भगती जागीरी पास्यूँ' — भक्ति की जागीर (साम्राज्य) मिलेगी।
मीरा यह भी स्पष्ट करती हैं कि वे बाग लगाएँगी, वृंदावन की कुंज-गलियों में गोविंद की लीला गाएँगी, और प्रभु के दर्शन के लिए आधी रात को यमुना के तीरे पहुँचेंगी।

चाकरी का प्रस्ताव मीरा की श्रीकृष्ण के प्रति उनकी दास्य-भक्ति और निरंतर सान्निध्य की तीव्र आकांक्षा को व्यक्त करता है।

उत्तर: मीरा चाकरी से एक साथ तीन लाभ पाना चाहती हैं — कृष्ण का दर्शन, उनका स्मरण, और भाव-भक्ति की जागीर। यही उनकी दास्य-भक्ति की पराकाष्ठा है।

प्रश्न 3

मीराबाई ने श्रीकृष्ण के रूप-सौंदर्य का वर्णन कैसे किया है?

हल

मीराबाई ने दूसरे पद में श्रीकृष्ण के रूप-सौंदर्य का सजीव एवं मनमोहक वर्णन किया है:

- 'मोर मुगट पीताम्बर सौहे' — सिर पर मोर-पंख का मुकुट और पीला वस्त्र (पीताम्बर) अत्यंत सोहता है।
- 'गल वैजन्ती माला' — गले में वैजंती (वैजयंती) फूल की माला पहने हैं।
- 'बिन्दरावन में धेनु चरावे, मोहन मुरली वाला' — वृंदावन में गायें चराते हुए मोहक मुरली बजाते हैं।

इस प्रकार मीरा ने कृष्ण के मुकुट, वस्त्र, माला, मुरली और गो-चारण — सभी का उल्लेख करके उनका पूर्ण रूप-सौंदर्य चित्रित किया है।

यह वर्णन सरल, भावपूर्ण और राजस्थानी-ब्रज भाषा में किया गया है जो पद को और आकर्षक बनाता है।

उत्तर: मीरा ने कृष्ण के मोर-मुकुट, पीताम्बर, वैजंती माला, मुरली और वृंदावन में गो-चारण का चित्रण कर उनका सुंदर रूप उकेरा है।

प्रश्न 4

मीराबाई की भाषा शैली पर प्रकाश डालिए।

हल

मीराबाई की भाषा शैली की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

1. मिश्रित भाषा: मीरा के पदों की भाषा में राजस्थानी, ब्रज और गुजराती का मिश्रण है। कहीं-कहीं पंजाबी, खड़ी बोली और पूर्वी बोलियों के शब्द भी मिलते हैं।
2. भावपूर्ण एवं सरल: भाषा सीधी, भावमयी और भक्ति-रस से सिक्त है। जटिल व्याकरणिक संरचना का अभाव है।
3. लोक-गीत शैली: पद संगीतात्मक और लय-युक्त हैं — इन्हें गाया जा सकता है।
4. राजस्थानी प्रयोग: 'री' (की), 'भीर' (पीड़ा), 'राख्यो' (रखा), 'म्हारी' (मेरी), 'घणो' (बहुत), 'हिवड़ो' (हृदय) जैसे राजस्थानी शब्दों का स्वाभाविक प्रयोग मिलता है।
5. दास्य-भाव की अभिव्यक्ति: 'दासी मीराँ' और 'चाकर राखो' जैसे प्रयोगों से दास्य-भक्ति की शैली स्पष्ट होती है।
6. सीधा संवाद: मीरा श्रीकृष्ण से सीधे बात करती हैं जिससे पदों में एक जीवंत संवाद-शैली आ जाती है।

उत्तर: मीरा की भाषा राजस्थानी-ब्रज-गुजराती मिश्रित, लयात्मक, सरल और भावपूर्ण है; दास्य-भाव और कृष्ण से सीधे संवाद उनकी शैली की विशेषता है।

प्रश्न 5

वे श्रीकृष्ण को पाने के लिए क्या-क्या कार्य करने को तैयार हैं?

हल

दूसरे पद में मीरा श्रीकृष्ण को पाने के लिए निम्नलिखित कार्य करने को तैयार हैं:

1. चाकरी (सेवा) करना — 'स्याम म्हाने चाकर राखो जी' — वे श्याम की नौकरी/सेवा करना चाहती हैं।
2. बाग लगाना — 'चाकर रहस्यूँ बाग लगास्यूँ' — वृंदावन में बाग लगाएँगी।
3. प्रतिदिन दर्शन करना — 'नित उठ दरसण पास्यूँ' — प्रतिदिन सुबह उठकर कृष्ण के दर्शन पाएँगी।
4. कुंज-गलियों में लीला गाना — 'बिन्दरावन री कुंज गली में, गोविन्द लीला गास्यूँ' — वृंदावन की गलियों में गोविंद की लीला गाएँगी।
5. ऊँचे महल बनाना और बगीचा रखना — 'ऊँचा ऊँचा महल बणावं बिच बिच राखूँ बारी' — सुंदर महल और बगीचे बनाएँगी।
6. कुसुम्बी साड़ी पहनकर दर्शन करना — 'साँवरिया रा दरसण पास्यूँ, पहर कुसुम्बी साड़ी' — केसरिया रंग की साड़ी पहनकर साँवरे के दर्शन पाएँगी।
7. आधी रात को यमुना-तट पर जाना — 'आधी रात प्रभु दरसण दीज्यो जमनाजी रे तीरां' — आधी रात को यमुना के किनारे प्रभु-दर्शन माँगती हैं।

उत्तर: मीरा कृष्ण को पाने के लिए चाकरी करना, बाग लगाना, नित दर्शन करना, लीला गाना, महल बनाना, कुसुम्बी साड़ी पहनकर दर्शन करना और आधी रात को यमुना-तट पर जाना — ये सभी कार्य करने को तैयार हैं।

प्रश्नावली 2.2 — प्रश्न-अभ्यास (ख) — काव्य-सौंदर्य

प्रश्न 1

निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए: हरि आप हरो जन री भीर। द्रोपदी री लाज राखी, आप बढ़ायो चीर। भगत कारण रूप नरहरि, धर्यो आप सरीर।

हल

भाव-सौंदर्य:

• इन पंक्तियों में मीरा हरि (श्रीकृष्ण) से अपनी पीड़ा हरने की प्रार्थना करती हैं।

• द्रौपदी की लाज बचाने का उदाहरण देकर वे हरि की भक्त-वत्सलता सिद्ध करती हैं — दुःशासन के चीरहरण से द्रौपदी की रक्षा के लिए हरि ने चीर बढ़ाते-बढ़ाते इतना लंबा कर दिया कि दुःशासन थक गया।

• भगत की रक्षा के लिए नरसिंह रूप धारण करना — 'रूप नरहरि धर्यो आप सरीर' — हरि की अवतार-ग्रहण की भक्त-वत्सलता का प्रमाण है।

शिल्प-सौंदर्य:

• भाषा: राजस्थानी मिश्रित ब्रज भाषा — 'री' (की), 'राख्यो' (रखा), 'धर्यो' (धारण किया) आदि।

• अनुप्रास अलंकार: 'हरि आप हरो' में 'ह' वर्ण की आवृत्ति।

• उदाहरण/दृष्टांत अलंकार: द्रौपदी और नरसिंह के प्रसंग दृष्टांत के रूप में प्रयुक्त हैं।

• लय और तुकबंदी: 'भीर-चीर-सरीर' में अंत्यानुप्रास (तुक) है जो पद को गेय बनाता है।

• संबोधन शैली: 'हरि आप' — सीधे भगवान को संबोधित करने से भावनात्मक तीव्रता आती है।

उत्तर: इन पंक्तियों में दास्य-भक्ति का भाव, दृष्टांत अलंकार (द्रौपदी/नरसिंह), अनुप्रास ('ह' की आवृत्ति), 'भीर-चीर-सरीर' की तुकबंदी और राजस्थानी-ब्रज मिश्रित भाषा — ये प्रमुख काव्य-सौंदर्य हैं।

प्रश्न 2

निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए: बूढ़तो गजराज राख्यो, काटी कुण्जर पीर। दासी मीराँ लाल गिरधर, हरो म्हारी भीर।

हल

भाव-सौंदर्य:

• पहली पंक्ति में गजराज (हाथी/गज) की रक्षा का प्रसंग है — जब गजेंद्र मगरमच्छ से डूब रहा था तब हरि ने उसे बचाया और गजराज (कुंजर) की पीड़ा समाप्त की।

• 'दासी मीराँ लाल गिरधर' — मीरा स्वयं को 'दासी' कहकर दास्य-भक्ति का सर्वोच्च भाव व्यक्त करती हैं।

• 'हरो म्हारी भीर' — मीरा पूर्व भक्त-रक्षा की परंपरा का स्मरण कराते हुए अपनी पीड़ा भी उसी तरह हरने की प्रार्थना करती हैं।

शिल्प-सौंदर्य:

• भाषा: राजस्थानी — 'राख्यो' (रखा/बचाया), 'काटी' (दूर की), 'म्हारी' (मेरी), 'लाल' (प्रिय/लाड़ले) आदि।

• अंत्यानुप्रास (तुक): 'पीर-भीर' — दोनों पंक्तियों के अंत में 'ईर' की ध्वनि।

• दृष्टांत अलंकार: गजराज-रक्षा का उदाहरण।
• 'लाल गिरधर' — संबोधन में प्रेम और श्रद्धा का मिश्रण; 'लाल' = प्रिय, 'गिरधर' = गोवर्धन धारण करनेवाले।
• गेय शैली: लय-युक्त पंक्तियाँ जो संगीत के साथ गाई जा सकती हैं।

उत्तर: इन पंक्तियों में गजराज-रक्षा का दृष्टांत, 'दासी' में दास्य-भक्ति, 'पीर-भीर' की तुकबंदी, राजस्थानी भाषा और गेय लय — ये प्रमुख काव्य-सौंदर्य हैं।

प्रश्न 3

निम्नलिखित पंक्तियों का काव्य-सौंदर्य स्पष्ट कीजिए: चाकरी में दरसण पास्यूँ, सुमरण पास्यूँ खरची। भाव भगती जागीरी पास्यूँ, तीनूं बाताँ सरसी।

हल

भाव-सौंदर्य:
• मीरा चाकरी (सेवा) को साधन मानकर उससे तीन लाभ गिनाती हैं:
- दर्शन (कृष्ण का साक्षात्कार),
- सुमरण/स्मरण (उनकी खरची = रोजाना का भोजन-व्यय),
- भाव-भक्ति (जागीरी = राज्य/साम्राज्य)।
• 'तीनूं बाताँ सरसी' — तीनों बातें एक साथ पूरी हो जाएँगी — यह संतुष्टि का भाव है।
• यहाँ मीरा की भक्ति व्यावहारिक भी है — वे चाकरी को लाभदायक सौदे के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

शिल्प-सौंदर्य:
• अनुप्रास: 'पास्यूँ' का तीन बार दोहराव — 'दरसण पास्यूँ', 'सुमरण पास्यूँ', 'जागीरी पास्यूँ' — यह पुनरुक्ति प्रकाश अलंकार है।
• रूपक अलंकार: सुमरण को 'खरची' (नित्य व्यय) और भाव-भक्ति को 'जागीरी' (राज्य) कहना रूपक है।
• राजस्थानी भाषा: 'पास्यूँ' (पाऊँगी), 'खरची' (खर्च/रोजी), 'जागीरी' (जागीर), 'सरसी' (सफल/पूरी होंगी)।
• 'खरची-सरसी' में तुकबंदी।
• संक्षिप्त और सटीक शैली: कम शब्दों में गहरा भाव — भक्ति की तीनों अवस्थाएँ एक ही चाकरी से।

उत्तर: इन पंक्तियों में दर्शन, स्मरण और भाव-भक्ति की 'तीनों बातें' पाने का भाव; 'पास्यूँ' की पुनरुक्ति; सुमरण=खरची व भक्ति=जागीरी का रूपक; राजस्थानी भाषा और 'खरची-सरसी' की तुक — ये प्रमुख काव्य-सौंदर्य हैं।

प्रश्नावली 2.3 — भाषा अध्ययन — शब्दों के प्रचलित रूप

प्रश्न 1

उदाहरण के आधार पर पाठ में आए निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित रूप लिखिए: उदाहरण — भीर = पीड़ा / कष्ट / दुख, री = की चीर, बूढ़तो, धर्यो, लगास्यूँ, कुण्जर, घणा, बिन्दरावन, सरसी, रहस्यूँ, हिवड़ो, राखो, कुसुम्बी

हल

निम्नलिखित शब्दों के प्रचलित (मानक हिंदी) रूप:

चीर = वस्त्र / कपड़ा

बूढ़तो = डूबता हुआ

धर्यो = धारण किया

लगास्यूँ = लगाऊँगी

कुण्जर = हाथी

घणा = बहुत

बिन्दरावन = वृंदावन

सरसी = सफल होंगी / पूरी होंगी

रहस्यूँ = रहूँगी

हिवड़ो = हृदय

राखो = रखो

कुसुम्बी = केसरिया रंग की (कुसुम्ब/सूरजमुखी के रंग की)

उत्तर: चीर=वस्त्र, बूढ़तो=डूबता हुआ, धर्यो=धारण किया, लगास्यूँ=लगाऊँगी, कुण्जर=हाथी, घणा=बहुत, बिन्दरावन=वृंदावन, सरसी=पूरी होंगी, रहस्यूँ=रहूँगी, हिवड़ो=हृदय, राखो=रखो, कुसुम्बी=केसरिया रंग की